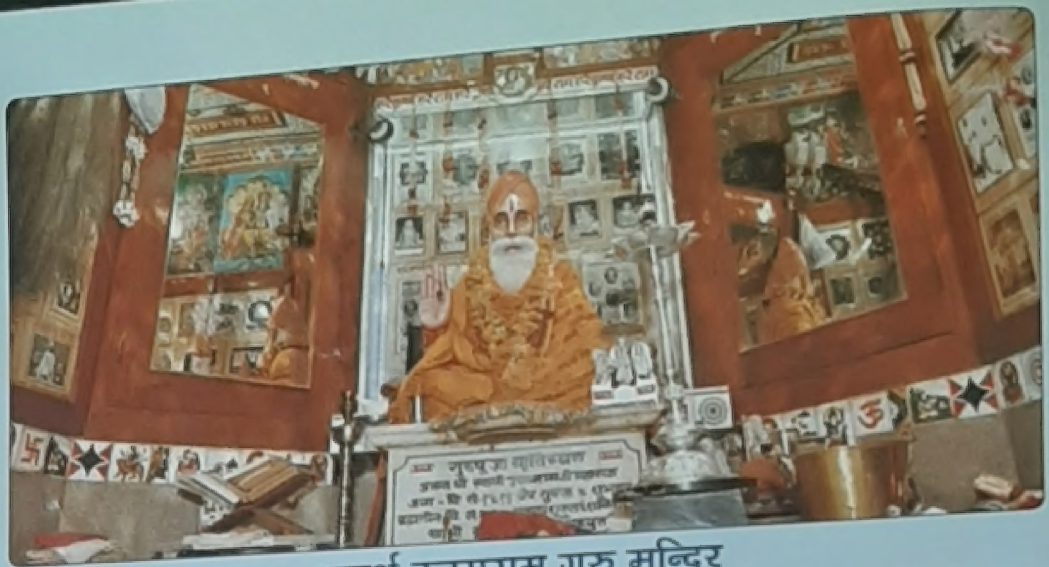


श्रीवैष्णव अग्र रसिक परम्परा में जोधपुर विरक्त गूदड़ गद्दी उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ) परिचय दर्शन



उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ) जोधपुर के आचार्य गण



आदर्श उत्तमराम गुरु मन्दिर



श्रीवैष्णव सन्त स्मृति स्थल राजगुरु स्वामी हरिरामजी की बगेची कागा में स्थित जोधपुर विरक्त गूदड़ गद्दी प्रवर्तकाचार्य श्री श्री 108 श्री स्वामी हरिरामजी महाराज की समाधि



श्री वैष्णव विरक्त गूदड़ गद्दी अग्रद्वार पीठ उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ) जोधपुर



श्रीवैष्णव सन्त स्मृति स्थल राजगुरु स्वामी हरिरामजी की बगेची कागा में स्थित उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ) के संस्थापक पूज्य भगवत्पाद श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज की समाधि

श्रीवैष्णव सन्त स्मृति स्थल राजगुरु स्वामी हरिरामजी की बगेची का विहंगम दृश्य

ॐ
श्रीवैष्णव अनन्त श्री आद्य जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य परम्परानुगत
जगद्गुरु स्वामी अग्रद्वाराचार्य जी महाराज रेवासा पीठ के अधीनस्थ
श्री स्वामी हरिरामजी महाराज की युक्त पीढ़ी शास्त्रोक्त जोधपुर विरक्त गूढ़ गद्दी

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ) परिचय दर्शन



गुरु प्रणालिका परिचय

(कुण्डलिया छन्द)

हरिराम परब्रह्म नमो, जीयाराम जगदीश।
बनानाथ हरि प्रकटे, हरि सुखरामा ईश॥
हरि सुखरामा ईश, युगल मत भेद न कोई।
अचलराम नवलेश, फूल^१ रु उत्तम^२ दोई॥
नारायण^३ व दयाराम^४ अचल शिष्य साशीश।
उत्तम विवेक वैराग्य वर, ज्ञान धार बह ईश॥

— स्वामी दयारामजी

प्रेरणास्त्रोत :

ब्रह्मवेत्ता अनन्त श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज 'वैरागी' के परम कृपापात्र

तत्त्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज 'अच्युत'

श्रीमहन्त-उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ), कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर-३४२००६

हरि गुरुभक्तों के सहयोग से प्रकाशक :

❖ उत्तम प्रकाशन, उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ) कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर-३४२००६

फोन : ०२९१-२५४७०२४, मोबाइल - ९४१४४ १८१५५, ९४६०५ ९०४७४

❖ प्रथम संस्करण : २०१६ ई०

विक्रम संवत् २०७३

वार्षिकोत्सव

❖ मूल्य : २० (बीस रुपये मात्र)



आचार्य पीठ प्रातः सव की नित्य आरती

आरती! गुरु की सदा सुखदाता। महिमा अगम वेद यों (नित) गाता।
आपा मेट आप को लखता। सत गुरु सोई सत का वक्ता।
ब्रह्म स्वरूप ब्रह्म का वेत्ता। ज्ञान विज्ञान दान नित देता।
सत गुरु अगम निगम का ज्ञाता। भिन्न भिन्न अर्थ सेन (भेद) समझाता।
दे उपदेश रु भ्रम मिटाता। भव सागर से पार पठाता।
“उत्तमराम” संत उलट समाता। उलट समाय परम पद पाता।

दोहा— उत्तम जोगी ऊगतो, राम भजन भरपूर।

“उत्तमराम” की एकता, हरदम राम हजूर ॥१॥

अनन्त श्री रामजी महाराज की जय। चार सम्प्रदाय बावन द्वारा की जय। चार धाम सप्तपुरी की जय।
अनन्त श्री स्वामी रामानन्दाचार्य भगवान् की जय। सर्वश्री स्वामी अग्रदासजी महाराज की जय।
अनन्त श्री स्वामी नाभादासजी महाराज की जय। श्री स्वामी सन्तदासजी महाराज की जय।
श्री स्वामी हरिरामजी महाराज की जय। श्री स्वामी जीयारामजी महाराज की जय।
श्री स्वामी सुखरामजी महाराज की जय। श्री स्वामी अचलरामजी महाराज की जय।
श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज की जय। जागती ज्योति स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज की जय।
अनन्त सन्त महात्माओं की जय। सद्गुरु महाराज की जय।

भए प्रकट कृपाला, दीन दयाला, कौसल्या हितकारी। हरषित महतारी, मुनि मन हारी, अद्भुत र
लोचन अभिरामा, तनु घनस्यामा, निज आयुध भुज चारी। भूषन बनमाला, नयन बिसाला, सोभा सिंध
कह दुई कर जोरी, अस्तुति तोरी, केहि बिधि करौं अनन्ता। माया गुन ग्यानातीत अमाना, बेद पु
करुणा सुख सागर, सब गुन आगर, जेहि गावहिं श्रुति सन्ता। सो मम हित लागी, जन अनुरागी, भयउ प्रगट
ब्रह्माण्ड निकाया, निर्मित माया, रोम रोम प्रति बेद कहै। मम उर सो बासी, यह उपहासी, सुनत धीर मति
उपजा जब ग्याना, प्रभु मुसकाना, चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै। कहि कथा सुहाई, मातु बुझाई, जेहि प्रकार सु
माता पुनि बोली, सो मति डोली, तजहु तात यह रूपा। कीजे सिसुलीला, अति प्रिय सीला, यह सुख
सुनि बचन सुजाना, रोदन ठाना, होइ बालक सुरभूपा। यह चरति जे गावहिं, हरिपद पावहिं, ते न परहि

श्री रामचन्द्र कृपालू भज मन हरण भवं भय दारूणम् । नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारूणम् ।
कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरज सुन्दरम् । पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुता वरम् ।
भजु दीनबन्ध दिनेश दानव दैत्यवंश निकन्दनम् । रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चन्द दशरथ नन्दनम् ।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम् । आजानुभुज शर चाप धर संग्रामजित खर दूषणम् ।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम् । मम हृदयकंज निवास कुरु कामादि खल दल गंजनम् ।

श्री सम्प्रदाय के श्रीकीर्ति ध्वज परम आचार्यश्री

संक्षिप्त श्री वैष्णवाचार्य प्रधानाचार्य श्री गुरु परम्परा परिचय

सीताकान्त-समारम्भां

श्रीरामानन्दाचार्य-मध्यमाम्।

अस्मदाचार्य (उत्तमरामाचार्य) पर्यन्तां वन्देऽहं गुरुपरम्पराम्॥

श्री मयार्दापुरुषोत्तम परात्पर सर्वज्ञ पूर्णब्रह्म श्रीरामजी

साकेत प्रधान लोकलीला सम्पादनार्थ त्रेतायुग के रघु संवत् में चैत्र शुक्ल श्री रामनवमी को अवतरण। श्री अयोध्याजी में प्रादुर्भाव। पिता-श्री दशरथजी, माता-श्रीमती कौशल्या देवी। उपदेश-(१) श्री रामगीता, (२) श्री राजधर्म प्रश्नावली आदि।

“ममैवांशो जगत्त्यस्मिन् प्रतिलोकमवस्थिताः

तत्तत्तुणाधिपतयो

ब्रह्मविष्णुकपर्दिनः॥”—स्कन्दपुराण श्रीरामसीता नित्य स्वरूप

नोट— पूर्वात्पर परम्परा के लिए दृष्टव्य “आचार्य सुबोध चरितामृत” लेखक- स्वामी रामप्रकाशाचार्य ‘अच्युत’,

११८ पीढ़ी श्री सम्प्रदाय शोधग्रन्थ।

श्री जगज्जननी श्री जानकी (सीताजी)

लोकलीला सम्पादनार्थ प्रादुर्भाव-त्रेतायुगस्थ वैशाख शुक्ल नवमी, जनकपुर धर्मान्तर्गत सीतामढ़ी (वर्तमान बिहार में)। पिता-मिथिलापति श्री जनकराज सौरध्वज, माता-श्रीमती सुनयनाजी। उपदेश-(१) मैथिलीमहोपनिषद्, (२) श्री सीतारामाभेदः, (३) दीनवात्सल्य आदि।

राम एव परं ब्रह्म राम एव परंतपः। राम एव परं तत्त्वं श्री रामो ब्रह्मतारकम्॥

सर्वेश्वरो यथा चाहं रामः सर्वेश्वरस्तथा। षड्गुणो भगवान् रामः षड्गुणाहं स्वभावतः॥

श्वगुरु परम प्रभु श्री हनुमन्तलालजी (वज्रांगी, बजरंगबली) महावीर हनुमान्

आविर्भाव-कार्तिक कृष्ण १४ त्रेतायुगस्थ, मतान्तर में—चैत्र वदि १४, तिरोभाव-चिरंजीव, जन्मस्थल-कांचनगिरि, माता-श्री केशरी जी, माता-श्री अंजनादेवी जी, सद्गुरु-सर्वेश्वरी श्री जानकी जी, विद्यागुरु-सूर्यनारायण, आशीर्वाद-पवन, अवतार-रुद्र, उपदेश-(१) श्री रामोपनिषद्, (२) श्री सीताष्टाक्षर स्तोत्र, (३) श्री रामतत्त्वम्, (४) श्री रामसीतास्तवः। कृति-हनुमानाटक।

श्व रचयिता श्री जगद्गुरु ब्रह्माजी

ष्टकाल के प्रारम्भकाल श्री विष्णु के नाभि कमलाग्रभाग में आविर्भाव, तिरोभाव-अतिमहाप्रलयान्त। पिता-श्री णुजी का संकल्प, सद्गुरु-हनुमानजी, उपदेश-(१) बृहद् ब्रह्म संहिता, (२) आर्ष श्री रामस्तवः श्री रामगीता, आर्ष ब्रह्मकृत श्री रामस्तव, (३) ब्रह्म सिद्धान्त संग्रह, (४) अभ्युदायिकौर्ध्व दैहिक स्तोत्र, (५) गायत्री कवच, (६) मारुति वन्दनम्, (७) त्रैलोक्य मोहन श्री राम कवच, (८) श्री सीतोपनिषदादि।

सद्गुरु श्रेष्ठ पद रत्नाकर आद्य महर्षि श्री वसिष्ठजी महाराज ‘चिरायु’

आविर्भाव-त्रेतायुगस्थ ऋषि पंचमी (भाद्रपद शुक्ल) सत्ययुग, जन्मस्थान-ब्रह्मलोक, पिताश्री-ब्रह्माजी, तिरोभाव-अन्तःस्थान, सद्गुरु-ब्रह्मदेव, कृतियां-(१) वसिष्ठ संहिता (पांचरात्र), (२) वसिष्ठ संहिता (ज्योतिष), (३) वसिष्ठ संहिता (ज्योतिष), (४) धनुर्वेद संहिता (नीति), (५) श्री सीतारामस्तव, (६) आश्रम धर्म निरूपण, (७) श्रीरामधाम वर्णन, (८) सन्ध्योपासन विधि, (९) वसिष्ठ हवन पद्धति, (१०) वसिष्ठ स्मृति आदि।

१३. जगद्गुरु श्री स्वामी द्वारानन्दाचार्य जी महाराज

आविर्भाव-वि. सं. १९६ फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा, तिरोभाव-वि. सं. ३७६ आषाढ़ शुक्ल ३, जन्मस्थल-सौराष्ट्र-
हारिका, पिता-श्री हरिशंकरजी भट्ट, माता-श्री गोमतीदेवीजी, सद्गुरु-ज. गु. श्री रामेश्वरानन्दाचार्यजी, प्रबन्ध-
(१) प्रश्नोत्तरावलि, (२) श्री रामचन्द्र दशक, (३) पाप वारक संग्रह, (४) पस्तत्त्व मीमांसा, (५) परिणाम विमर्श आदि

१४. जगद्गुरु श्री स्वामी देवानन्दाचार्य जी महाराज

आविर्भाव-वि. सं. ३२६ वैशाख शुक्ल १०, तिरोभाव-वि. सं. ५२६ माघ पूर्णिमा, जन्मस्थल-प्रयाग, पिता-श्री
मनमोहनजी तिवारी, माता-श्री मती सरस्वतीदेवी जी, सद्गुरु-ज. गु. श्री द्वारानन्दाचार्यजी महाराज, प्रबन्ध-
(१) राघवाष्टक, (२) सदाचार प्रदीपिका, (३) योग पंचक, (४) ब्रह्म लक्षण संस्तवः, (५) नमस्कार माला
कृति-श्री बोधायन वृत्तिसार (श्री प्रमिताक्षरावृत्ति) आदि।

१५. जगद्गुरु श्री स्वामी श्यामानन्दाचार्य जी महाराज

आविर्भाव-वि. सं. ४८६ आषाढ़ शुक्ल २, तिरोभाव-वि. सं. ६८६, जन्मस्थल-जगन्नाथपुरी, पिता-श्री दुर्गाचरणजी
माता-श्री मती यशोदादेवी, सद्गुरु-ज. गु. श्री देवानन्दाचार्य जी महाराज, प्रबन्ध-(१) श्री नवरत्नी, (२) रघु
पंचक, (३) श्री सीतास्तव, (४) श्रुति तात्पर्य निर्णय, (५) परभक्ति निरूपण, (६) प्रभाकर मत निरास, (७)
मन्त्रराज रामायण आदि।

१६. जगद्गुरु श्री स्वामी श्रुतानन्दाचार्य जी महाराज

आविर्भाव-वि. सं. ६३६ श्रावण शुक्ल सप्तमी, तिरोभाव-वि. सं. ८३६, जन्मस्थल-अहिल्या स्थान कमते
दरभंगा (बिहार), पिता-श्री सीताकान्तजी, माता-श्री मती कमलादेवीजी, सद्गुरु-ज. गु. श्री श्यामानन्दाचार्य
प्रबन्ध-(१) श्रुति वेद्यस्तव, (२) श्रौत सिद्धान्त बिन्दु, (३) सर्व श्रुति समन्वय, (४) वेद विद्या समु
(५) उपेयोपाय दर्पणादि।

१७. जगद्गुरु श्री स्वामी चिदानन्दाचार्य जी महाराज

आविर्भाव-वि. सं. ७४६ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, तिरोभाव-वि. सं. ८९६, जन्मस्थल-चित्रकूट, पिता-श्री सोमभद्र
माता-श्री मती मालतीदेवीजी, सद्गुरु-ज. गु. श्री श्रुतानन्दाचार्य जी, प्रबन्ध-(१) सच्चिदानन्द श्री रामष्टकम्, (२)
प्रतिबन्धक पंचकम्, (३) प्रमेयोद्देश भास्करः, (४) चिदात्म प्रबोध आदि।

कर्मपूतिर्भवेद् यस्य स्मरणात् कीर्तनात् तथा । वन्देऽहं सच्चिदानन्दं तं रामं सर्वसौख्यदम् ॥

८. जगद्गुरु श्री स्वामी पूर्णानन्दाचार्य जी महाराज

आविर्भाव-वि. सं. ८६६ वैशाख कृष्णा १३, तिरोभाव-वि. सं. १०६७ वैशाख शुक्ल पूर्णिमा, जन्मस्थ
अवन्तिका (उज्जैन), पिता-श्री गोविन्ददेवजी, माता-श्री मती नलिनीदेवी, सद्गुरु-ज. गु. श्री चिदानन्दाचार्य
श्रीमठ - पीठ पंचगंगाघाट, काशी। प्रबन्ध-(१) श्री राम पंचक, (२) बोध नक्षत्र माला, (३) श्री रामभक्ति वि
(४) मुक्ति मीमांसा, (५) मन्त्र रत्न रामायण, (६) बोधायन मतदर्शनादि।

९. जगद्गुरु श्री स्वामी श्रियानन्दाचार्य जी महाराज

आविर्भाव-अज्ञात, दीक्षा-वि. सं. १०६६ वैशाख शुक्ल ९, तिरोभाव-वि. सं. १२०६, जन्मस्थल-जन
पिताश्री-पशुपति उपाध्यायजी, माताश्री-गंगादेवजी, सद्गुरु-ज. गु. श्री पूर्णानन्दाचार्यजी, श्रीमठ - पीठ, पंचगंगा
वाराणसी, प्रबन्ध-(१) भक्ति चिन्तामणि, (२) श्रिय श्रियः प्रपत्ति षट्कम्, (३) हनुमदष्टकम्, (४) सि
विजय, (५) प्रमिताक्षरावृत्तिसार, (६) श्रौत प्रमेय चन्द्रिका आदि।

२०. जगद्गुरु श्री स्वामी हय्यनिन्दाचार्य जी महाराज "श्री वैष्णवाचार्य"
आविर्भाव-वि. सं. १९५६

आविर्भाव-वि. सं. ११५६ आषाढ शुक्ल ११, तिरोभाव-वि. सं. १३५६, जन्मस्थल-कर्णपुर, पिताश्री-रामकुमार अवस्थी, माताश्री-सरस्वती देवीजी, सद्गुरु-ज. गु. श्री श्रियानन्दाचार्यजी महाराज, आचार्य पीठ — पंच गंगाघाट, श्रीमठ काशी। कृति-(१) श्री सीताराम विंशति, (२) भगवत्समाश्रय, (३) प्रपत्र सर्वस्व, (४) सिद्धांत विंशति, (५) श्री रामार्थ रत्न मंजुषा (श्री रामार्थ विंशति), (६) चरम मन्त्र रामायण, (७) प्रमाण दीपिका आदि।

२१. जगद्गुरु श्री स्वामी राघवानन्दाचार्य जी महाराज “श्री वैष्णवाचार्य”
आविर्भाव-वि. सं. १२०६ चैत्र शुक्ल १० दिने

आविर्भाव-वि. सं. १२०६ चैत्र शुक्ल ११, तिरोभाव-वि. सं. १३९६, जन्मस्थल-अयोध्याजी (वसिष्ठ कुण्ड), पिताश्री-अवधेश प्रसाद त्रिपाठी, माताश्री-अम्बिकादेवीजी, सद्गुरु-ज. गु. श्री हर्यानन्दाचार्य जी, आचार्यपीठ—पंचगंगा घाट, श्रीमठ काशी। प्रबन्ध-(१) श्री राघवेन्द्र मंगल माला, (२) श्री सीता मंगल माला, (३) श्रौत तत्त्व समुच्चय, (४) श्री राघव प्राप्ति बोध, (५) वेद रहस्य भाष्य, (६) अनन्यता निवेदनम् आदि।

२२. जगद्गुरु श्री स्वामी रामानन्दाचार्य जी महाराज "श्री परमाचार्य"
आविर्भाव-वि. सं. १३०६

आविर्भाव-वि. सं. १३५६ माघ कृष्ण सप्तमी, तिरोभाव-वि. सं. १५३२ चैत्र शुक्ल रामनवमी, जन्मस्थल-
प्रयागराज, पिताश्री-पुण्यसदनजी शर्मा, माताश्री-श्री मती सुशीलादेवीजी, सद्गुरु-ज. गु. श्री राघवानन्दाचार्य जी
महाराज, आचार्य पीठ — श्रीमठ, पंचगंगाघाट, काशी। प्रबन्ध-(१) आनन्द भाष्य, (२) त्रय भाष्यकर्ता, (३)
रामानन्द दिग्विजय भास्कर। शिष्य-प्रशिष्य, द्वादश भागवत-१. अनन्तानन्द जी, २. सुखानन्दजी, ३. सुरसुरानन्दजी,
४. नरहरियानन्दजी, ५. पीपाजी, ६. कबीर साहब, ७. भावानन्दजी, ८. सेनाजी, ९. धनाजी, १०. रविदास (रामदास
या रैदासजी) जी, ११. गालवानन्दजी, १२. योगानन्दजी, १३. साध्वी पद्मावतीदेवीजी, १४. साध्वी सुरसरिदेवजी।
जिन्होंने भारतवर्ष में मानवता के पाठ में श्रीवैष्णव धर्म का सिद्ध प्रचार-प्रसार किया और हिन्दू धर्म रक्षण किया।

"रामानन्दः स्वयं रामः प्रादुर्भूतो महीतले"

२३. जगद्गुरु श्री स्वामी अनन्तानन्दाचार्य जी महाराज “ श्री वैष्णव ”

अवतरण-वि. सं. १३६३, कार्तिक शुक्ला ११ देवोत्थानी, जन्मस्थल-महेशपुर (उत्तरप्रदेश), पिता-श्री विश्वनाथमणि त्रिपाठी, माताश्री-पार्वतीदेवी, सद्गुरु-ज. गु. श्री स्वामी रामानन्दाचार्य जी, आचार्यपीठ — श्रीमठ पंच गंगाघाट, काशी। गद्दी-वि. सं. १५३२, साकेत धाम-वि. सं. १५४० देवोत्थानी ११, कृति-(१) श्री श्रुति सिद्धान्त भास्कर निर्णय, (२) सिद्धान्त दीपक, (३) सद्द्विद्यार्थ निर्णय, (४) अनन्त शिक्षामृत, (५) यतीन्द्रषट्कादि।

२४. जगद्गुरु श्री स्वामी कृष्णपयाहारी (श्री कृष्णदासजी महाराज)

अवतरण-अज्ञात, गद्दी-वि. सं. १५४०, साकेत-वि. सं. १५४१, गलताधाम (जयपुर) पर अधिकार सिद्ध किया।
राजस्थान में श्री वैष्णव परम्परा का प्रचार-प्रसार।

२५. जगद्गुरु श्री अग्रदेवाचार्य जी महाराज

अवतरण-वि. सं. १५५३ फाल्गुन शुक्ल ५। श्री रामभक्ति परम्परा में मध्यकालीन रसिक-मधुरोपासना के प्रवर्तकाचार्य एवं भक्त मालाकार श्री नाभादासजी के प्रेरणा स्रोत, रामानन्दीय चतुर्दश द्वारा गदियों की मूल पीठ, रेवासा धाम के संस्थापक, आपश्री की अनुभव गिरा (पद्यात्मक कुण्डलिया) मुख्य पीठ अग्रद्वार (रेवासा) से द्वाराचार्य श्री स्वामी राघवाचार्य जी महाराज द्वारा चतुः सम्प्रदाय दिगदर्शन, श्री आचार्य विजय आदि कई बृहत् साहित्य प्रकाशित है। अन्यान्य स्थानों से भी यत्र-तत्र कई आवृत्तियाँ प्रकाशित व उपलब्ध हैं। प्रमुख रचनाएं-(१) ध्यान मंजरी, (२) कुण्डलिया, (३) अग्रसागर, (४) अष्टयाम, (५) गुरु अष्टक, (६) प्रह्लाद चरित, (७) श्री सीताराम अष्टक, (८) श्री मैथिली शरणाष्टकम्, (९) श्री राम प्रपत्ति, (१०) रामजेवनार, (११) विश्व ब्रह्मज्ञान, (१२) हनुमानाष्टक, (१३) हरिनाम माला, (१४) हरि प्रियानाम माला, (१५) हरिनाम प्रताप जस, (१६) रहस्य त्रय

३४. श्री स्वामी चतुरदासजी (रामचतुरजी) महाराज (दान्ताड़ा)

परिचय-आप केवलरामजी के वैवाहिक जीवन में सुपुत्र थे, बाद में आप वि. सं. १८८७ में गद्दी नशीन हुए तथा वि. सं. १८९० में साकेतवासो हो गये। आपके पुत्र जोगीराम जी काछोला निवासी तुलसीदासजी (नानाजी) के गोद गये और आपको गद्दी पर दौलतरामजी (छोटे भाई) महन्त बने। सद्गुरु-श्री स्वामी केवलरामजी महाराज 'वैरागी'।

३५. श्री स्वामी दौलतरामजी महाराज (दान्ताड़ा)

परिचय-आप केवलरामजी के पुत्र थे, वि. सं. १८९० में गद्दीधर महन्त हुए। वि. सं. १८९५ में आप का विवाह हुआ। घरेलू अन्तर्कलह, गृहस्थ पारिवारिक मतभेद के कारण विरक्त रूप से विचरण करने के उद्देश्य से दान्ताड़ा पीठ का सर्वथा त्याग कर दिया। आपके गद्दी त्याग के आप मण्डल गढ जाकर रहे और इसके बाद दान्ताड़ा गद्दी पर गृहस्थ गद्दी का प्रचलन रहा। सद्गुरु-श्री चतुरदासजी महाराज। साकेत-वि. सं. १९४५।

३६. श्री स्वामी गंगारामजी महाराज "वैरागी" (विरक्त भाव से विचरण एवं विरक्त गद्दी प्रवर्तक)

अवतरण-वि. सं. १८९० अनुमानतः, जन्मस्थान-माण्डलगढ़, दीक्षा-१८३२, सद्गुरु-श्री दौलतरामजी महाराज, वन विचरण-श्री राम आश्रम, चम्बल घाटी (कोटा) में समाधि धाम। अपने गुरुदेव श्री दौलतरामजी को बुलाकर शिरोपाँव पधरावणी करके वि. सं. १९२९ में जोधपुर की स्वतन्त्र विरक्त गद्दी स्थापन करके अपने परम शिष्य सन्त श्री हरिरामजी को श्रीमहन्त पद पर स्थापित करके आप भ्रमणशील विरक्तावस्था में चम्बल तट पर अपने पूर्व तपस्थली पर पधार गये।

३७. श्री स्वामी हरिरामजी महाराज "वैरागी" (जोधपुर अग्ररसिक वैरागी गद्दी के प्रथम पीठाधीश्वर)

अवतरण-भाटी क्षत्रिय परिवार में वि. सं. १८१२, सद्गुरु-श्री स्वामी गंगारामजी महाराज "वैरागी", दीक्षा-वि. सं. १८३७, साकेत-वि. सं. १९३३ चैत्र वदि २ सोमवार, "हरिसागर" एवं "वाणी प्रकाश" नामक ग्रन्थ में आपकी रचना मूल एवं टीका सहित उत्तम प्रकाशन जोधपुर द्वारा प्रकाशित एवं लोकार्पित होकर उपलब्ध है।

स्वामी दौलतरामजी के विरक्त काल में स्वामी गंगारामजी द्वारा सम्बत् १९२९ में जोधपुर की विरक्त गद्दी स्थापन द्वारा स्वामी हरिरामजी महाराज को प्रथम पीठाधीश्वर के रूप में गद्दी नशीनी हुई। तब से दान्ताड़ा गृहस्थ गद्दी से जोधपुर का कोई साम्प्रदायिक सम्बन्ध नहीं रहा, यह गद्दी अग्रद्वाराधीन रही है और अब भी है। आपश्री जोधपुर महाराजा तख्तसिंहजी द्वारा छड़ी एवं छत्र से शिरोपाँव सम्मानित हुए। आपके ज्ञान दीक्षित सात शिष्यों में १. श्री जीयारामजी, २. श्री मुरलोधरजी, ३. श्री आतमारामजी, ४. श्री विश्वदेवजी (दूधाधारीजी), ५. श्री हीरालालजी, ६. श्री नेनूरामजी एवं ७. साध्वी मोराबाईजी हुए।

८. श्री स्वामी जीयारामजी महाराज "वैरागी" (जोधपुर श्रीवैष्णव गद्दी के द्वितीय पीठाधीश्वर)

अवतरण-वि. सं. १८१४ आषाढ शुक्ल १४, विश्वकर्मा वंशावली में सूत्रधार बरड़वा गौत्र में। सद्गुरु-श्री स्वामी हरिरामजी महाराज 'वैरागी', दीक्षा-वि. सं. १८३९, साकेत-१९५४ मार्गशीर्ष शुक्ला १२ रविवार। स्वामी रामप्रकाशाचार्य द्वारा 'साकेत शताब्दी' पर जीवन स्मारिका में गद्दी पीठ की आचार संहिता के साथ वाणी की टीका प्रस्तुत की गई। आपने जोधपुर में फतेहसागर के पास सद्गुरु महाराज के साथ रह कर वि. सं. १८२५ वैशाख शुक्ल ५ रविवार को एक आश्रम की स्थापना की जो 'आदर्श गुरुद्वार' के नाम से सद्गुरुस्थों के अवैध ट्रस्ट अधीन बगैर किसी साधु-महन्त के अद्यावधि प्रसिद्ध है। आपने आजीवन यहीं पर प्रवास विहार किया। आप बाल्ये नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे, आपका अनुभव वचनमृत परम्परानुगत वि. सं. १९६४ के प्रथमावृत्ति से अद्यावधि पर्यन्त मूल व गुरु सम्प्रदाय के वाणी प्रकाश नामक ग्रन्थ में मूल व टीका प्रकाशित और उपलब्ध है। आपके नामलिवारी शिष्यों में प्रसिद्ध श्री सुखरामजी, श्री बनानाथजी एवं साध्वी नौजरामजी हुए।

संवत् उगणीसे चौपने, श्री स्वामी जीयाराम। मिगसर सुदि सूरज दिने, कियो परम पद धाम॥

पचावन वैशाख सुदि, तिथि सूरज सु नाम। नौजराम सुखराम मिलि, कियो प्रतिष्ठा काम॥

—सौजन्य श्री समाधि चरण पादुका स्थल (कागा) शिलालेख

आप वर्गविहीन समाज के समर्थक, हिन्दू (सनातन) धर्म में भूमिक धारणाओं के विरुद्ध संपर्क, निष्पक्ष, सत्यवक्ता, संशयरहित, सर्वधर्मशास्त्र निष्णात, कई भाषाओं के ज्ञाता एवं कई मानद एवं शास्त्रविद् उपाधियों से सम्मानित निरभिमानी सन्त है। अपने सामयिक बाधक प्रवृत्तियों में संपर्क की परिस्थितियों में आदर्श गुरुद्वारा साम्प्रदायिक सम्पत्ति (गद्दी) पर अनधिकृत कब्जा करने वाले काल्पनिक प्रत्यास को न्यायिक प्रक्रिया विधि में अवैध घोषित करार दिया गया है। इससे श्रीवैष्णव विरक्त गूढ़ गद्दी के वैरागी आश्रम को स्वाधिकारिता से जीवित रहने की प्रक्रिया वि.सं. २०४७ ज्येष्ठ सुदी ९-१० (१९९० ई.) में श्रीमठ काशी एवं रेवासानोठ से छड़ी, छत्र, चंवर की गद्दी गरीमा प्राप्त होने में सार्थकता के साथ सम्पन्न हुई और गुरु गद्दी-साहित्य इकट्ठान सहित स्वाधिकार प्राप्त किये। पूर्वाचार्य श्री स्वामी केवलरामजी के शिष्य श्री स्वामी गंगादास जी द्वारा गुरुस्व गद्दी का बहिष्कार एवं श्रीवैष्णव विरक्त गूढ़ गद्दी (जोधपुर) का पुनर्स्थापना की मान्यतापूर्वक धर्म-सम्प्रदाय विधान प्रकल्पन किया। भारतवर्ष के उत्कर्ष में प्राचीन से अर्वाचीन/अद्यतन समाज को धर्म प्रचार आचर-संहिता का विशाल सत्साहित्य भण्डार श्रीवैष्णव सम्प्रदाय के महापुरुष आचार्यगण से मिला है। उतना किसी भी सक्षम सम्प्रदाय ने नहीं दिया। इसका परिचय दर्शन पूर्वात्पर गुरु प्रणाली के इंगित से स्पष्टः अवगत होता है। श्रीवैष्णव धर्म सम्प्रदाय के विराट स्वरूप में सन्त निखिल शास्त्र निष्णात, समय के युगपुरुष, त्रिकालदर्शी, साहित्यकार, वेदान्त मार्तण्ड महापुरुष हुए हैं। उन्हीं की शिष्य शाखा-परम्पराएँ अद्यावधि उनके सैद्धान्तिक पद चिह्नों का अनुकरण करते हुए जन-कल्याण भावनाएँ संजो रहे हैं।

सनातन धर्म के अनुयायी पिछड़े/दलित वर्ग के और कृषक/मजदूर इत्यादि ग्रामीण शिक्षित हो या अशिक्षित, किन्तु सभी के कण्ठाग्र विचारानुगत कर्तव्य पारायणता कर्म सात्विकता, योगमार्गीय उपासना, पूजा-पाठ अथवा गूढ़ उपनिषद् तत्त्व का परमार्थ बोध मुख से जो बोला जाता है। उनका सारा श्रेय सन्त महापुरुषों की सरल, पद्यात्मक भाषानुवाद में कथित बोलचाल की भाषा का काव्य ही है, जो आज के शिक्षित वर्ग के समझने में सरल नहीं है। ऐसी सन्त वाणी में युगपुरुष स्वामी सुखरामजी महाराज कृत परम गूढ़ भाव से अनुभव स्रोत में चौरासी भवनों को 'अचलोत्तम ज्ञान पीयूष वर्षणी' टीका द्वारा समझाया है, जो अज्ञ तज्ञ वृत्तानुवृत्ति के सभी प्रेमीजनों की सुलभता का विषय-वाद है। सटीक 'अचलराम ग्रन्थावली' (चार भाग), हरिसागर टीका एवं सुबोध टीका दर्पण इत्यादि गुरु साहित्य तथा 'लाख वर्षीय कैलेण्डर', 'पिंगल रहस्य' (छन्द शास्त्र का अपूर्व ग्रन्थ), 'आचार्य सुबोध चरितामृत' (सम्प्रदाय का शोध ग्रन्थ), भारतीय समाज दर्शन, नशा खण्डन दर्पण, रामप्रकाश शब्द सुधाकर, रामप्रकाश भजन प्रभाकर, कामधेनु, ज्योतिष दोहावली, रामप्रकाश शब्दावली, भारत के व्यास आदि शताधिक सम्पादित, टीकाएँ एवं रचना ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

पुरस्कार व सम्मान—

(1) मानद 'स्वतंत्रता सेनानी', (2) राजस्थान राज्यपाल द्वारा सामाजिक-साहित्यिक क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिये 'डॉ. अम्बेडकर सम्मान', (3) जोधपुर नगर निगम द्वारा 'जोधपुर गौरव', (4) 'मेघ-मार्तण्ड', (5) 'समाज शिरोमणि', (6) 'छन्द-विशेषज्ञ', (7) 'ज्योतिष वराह मिहिर', (8) 'कला आराधक' आदि।

शैक्षणिक योग्यता—

(1) 'तर्कवागीश', (2) 'आयुर्वेद-रत्न', (3) 'साहित्य-शास्त्री', (4) 'साहित्याचार्य', (5) 'कविभूषण', (6) 'विद्यावाचस्पति', (7) 'रामायणाचार्य', (8) 'धर्मवारिधि', (9) 'R.M.P.' आदि।

क्रमांक	नाम मय पिता, जोत्र	संधिपत पता	वार्षिक सेवा दिन
२७२.	अनिल स्वामी/श्री नोपाराम स्वामी	चक ३ डी-डब्ल्यू-एम, रावतसर-३३५५२४	भाद्रपद वदि १ सायं
२७३.	रामवदन प्रजापत/श्री द्वारकारामजी	बन्दतोला, मुम्बई	भाद्रपद वदि २ प्रातः
२७४.	हिम्मताराम सुधार/श्री मिश्रीलालजी धामू	३१ सामी स्ट्रीट, चूलै, चैत्रई-६००११२	भाद्रपद वदि २ सायं
२७५.	प्रह्लादराम जोषिंग/श्री भगवानारामजी जोषिंग	V.P.O. छौतर-३४३५३५ (बाडमेर)	भाद्रपद वदि ३ प्रातः
२७६.	गोकुलराम मेघवाल/श्री तुलछाराम जी मेघवाल	श्री लक्ष्मणनगर (चाडी), फलोदी	भाद्रपद वदि ३ सायं
२७७.	भूराराम जोषिंग/श्री मूलारामजी जोषिंग	V.P.O. शहर-३४४००१ (बाडमेर)	भाद्रपद वदि ४ प्रातः
२७८.	दुष्यन्त जनागल/श्री रामस्वरूप जनागल	V.P.O. रताऊ, वाया लाडनू-३४१३१७	भाद्रपद वदि ४ सायं
२७९.	दिनेश भाई परमार/श्री मनसुखभाई परमार	अन्सर नगर, अंधेरी (ई) मुम्बई	भाद्रपद वदि ५ प्रातः
२८०.	अर्जुन सुधार/श्री पेंपाराम सुधार	गाँव सुखमडला, तह.शेरगढ़ (जोधपुर)	भाद्रपद वदि ५ सायं
२८१.	कैलाश मिस्त्री/श्री नारायणजी प्रजापत	दईसर, हाल - मुंबई	भाद्रपद वदि ६ प्रातः
२८२.	कन्हैयालाल एडवोकेट/श्री रेशमाराम चौहान	V.P.O. रामगढ़-३४५०२२ (जैसलमेर)	भाद्रपद वदि ६ सायं
२८३.	उम्मेदराम कुलरिया/श्री शोगारामजी	V.P.O. नागाणा-३४४०२६	भाद्रपद वदि ७ प्रातः
२८४.	शंकरलाल लोहिया/श्री मुंगनारामजी	इन्द्रा कॉलोनी, नागौर-३४२००१	भाद्रपद वदि ७ सायं
२८५.	लालूराम धीर/श्री जेठारामजी धीर	V.P.O. सोमेसर-३४२०२५	भाद्रपद वदि ८ प्रातः
२८६.	श्रीमती सुमन पटवारी/श्री संतलाल दुदवाल	V.P.O. पिचकारी, त.नोहर-३३५५३०	भाद्रपद वदि ८ सायं
२८७.	खंगाराम बूढ़ड़/श्री भूरारामजी बूढ़ड़	V.P.O. शेरगढ़-३४२०२८	भाद्रपद वदि ९ प्रातः
२८८.	बंशीलाल दुधवाल/श्री ब्रजलालजी	V.P.O. पिचकारी, त.नोहर-३३५५३०	भाद्रपद वदि ९ सायं
२८९.	मोहनलाल अट्टावनिया/श्री हजारारामजी	जेजे कॉलोनी, मादीपुर दिल्ली	भाद्रपद वदि १० प्रातः
२९०.	आत्माराम प्रजापत/श्रीतनसुखरामजी	V.P.O. आलमगढ़, अबोहर-१५२११६	भाद्रपद वदि १० सायं
२९१.	श्रीमती अग्रादेवी/श्री भानीरामजी मांडण	बड़ा मडला, देचू-३४२३१४	भाद्रपद वदि ११ प्रातः
२९२.	श्रीमती शान्तिदेवी हुड्डा/धर्मपत्नी श्री भगवानाराम	V.P.O. गांगियासर, फतेहपुर शेखावाटी	भाद्रपद वदि ११ सायं
२९३.	श्रीमती मगीदेवी/धर्मपत्नी श्री लाभूरामजी	देचू-३४२३१४	भाद्रपद वदि १२ प्रातः
२९४.	भगवानाराम हुड्डा/श्री नारायणरामजी	V.P.O. गांगियासर, फतेहपुर शेखावाटी	भाद्रपद वदि १२ सायं
२९५.	भीमराव/श्री निवरुती पोल	भाईदर (ई), मुम्बई-७८	भाद्रपद वदि १३ प्रातः
२९६.	श्रीमती रामप्यारी हुड्डा/धर्मपत्नी श्री रघुवीरसिंह	V.P.O. गांगियासर, हाल सीकर	भाद्रपद वदि १३ सायं
२९७.	रामसिंह ईन्दा/श्री देवीसिंह जी ईन्दा	गाँव देवातू (जोधपुर)	भाद्रपद वदि १४ प्रातः
२९८.	बलवीरसिंह हुड्डा/श्री नारायणराम हुड्डा	V.P.O. गांगियासर, फतेहपुर शेखावाटी	भाद्रपद वदि १४ सायं
२९९.	रामकिशन चौहान/श्री अर्जुनरामजी	तलवाड़ा झील-३३५५२५	भाद्रपद वदि ३० प्रातः
३००.	सुश्री कुलवन्त कौर/पुत्री श्री जगसिरसिंह	V.P.O. कालावाली, हरियाणा	भाद्रपद वदि ३० सायं
३०१.	श्रीमती लहरोंदेवी/श्री भीयाराम बूढ़ड़	V.P.O. गुमानसिंहपुरा (शेरगढ़)	भाद्रपद सुदि १ प्रातः
३०२.	विनोदकुमार सोनेल/श्री लुणारामजी	V.P.O. चाँदिलाव, त. बीलाड़ा-३४२०२७	भाद्रपद सुदि १ सायं
३०३.	मुलतानाराम इणकिया/श्री छत्तारामजी इणकिया	V.P.O. कोटड़ी (पीथला) ३४५००१	भाद्रपद सुदि २ प्रातः
३०४.	प्रकाश सेजु/श्री मोहनरलालजी सेजु	V.P.O. बिसलपुर, जोधपुर-३४२०२७	भाद्रपद सुदि २ सायं
३०५.	मोहनलाल माकड़/श्री सहजारामजी सुथार	प्लॉट नं. ९५, चांदना भाकर, जोधपुर-३	भाद्रपद सुदि ३ प्रातः
३०६.	राजेश भाटी/श्री धन्नारामजी भाटी	V.P.O. काकेलाव, जोधपुर-३४२०२७	भाद्रपद सुदि ३ सायं
३०७.	साध्वी मानाबाई/शिष्या संत सूंडारामजी	चक गोविंदराम, 7 BLD श्री विजयनगर	भाद्रपद सुदि ४ प्रातः

क्रमांक	नाम मय पिता, गोत्र	संक्षिप्त पता	वार्षिक
४८८.	खेमचंद राठौड़/श्री हरिरामजी राठौड़	नई घड़साना मंडी-३३५७०७	पौष सुदि
४८९.	श्रीमती शांतिबाई साधवी/श्री रूपाराम सोलंकी	चकजनतावाली घड़साना नई मंडी	पौष सुदि
४९०.	ओमप्रकाश एडवोकेट/श्री बीरबलरामजी सिंहमार	पुरानी आबादी, श्रीगंगानगर-३३५००१	पौष सुदि
४९१.	धनाराम लौवा/श्री छोगारामजी लौवा	V.P.O. नाथड़ाऊ-३४२३०९	माघ वति
४९२.	बस्ताराम चौहान/श्री देदारामजी चौहान	सांकड़ा-३४५०२७ (पोकरण)	माघ वति
४९३.	गोबरराम देपाल/श्री सांवलरामजी देपाल	सरवड़ी-३४४०२६ (बाडमेर)	माघ वति
४९४.	सूबेदार तुलसीराम/श्री किशनारामजी सुण्डा	V.P.O. चाचीबाद बड़, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)	माघ वति
४९५.	बाबूलाल बरड़वा/श्री शंकररामजी	V.P.O. बरसिंगा (बाडमेर)	माघ वति
४९६.	मोतीराम राठौड़/बनाजी राठौड़	रामदेव टेण्ट, सुमेरपुर-३०६९०२	माघ वति
४९७.	महेन्द्रसिंह गहलोत/श्री मानसिंहजी माली	महामंदिर रोड, जोधपुर	माघ वति
४९८.	भँवरसिंह चौहान/श्री शिवसिंहजी राजपूत	काँगड़ी, जोधपुर-३४२००६	माघ वति
४९९.	भगाराम नाँगल/श्री राणाराम सुथार	V.P.O. बस्तुआ, (बालेसर)	माघ वति
५००.	संजयकुमार गुप्ता/श्री हरीश स्वरूप गुप्ता	५२६, डिफेंस कॉलोनी, चौ. रोड़, जोधपुर	माघ वति
५०१.	कालूरामजी कूमावत/श्री बहादररामजी टाक	P.O. आलमगढ़, अबोहर (फिरोजपुर)	माघ वति
५०२.	शंकरलाल अध्यापक/श्री भेरारामजी माधव	V.P.O. कोलीवाड़ा-३०६९०२	माघ वति
५०३.	वैद्य श्री सांवरमल/ओंकारमलजी शर्मा	V.P.O. चाचीबाद बड़, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)	माघ सुदि
५०४.	श्री गोपीदेवी कुलरिया/श्री सांगारामजी	V.P.O. दांतल, वाया फलसूंड (पोकरण)	माघ वति
५०५.	ओमप्रकाश	इन्दौर (मध्यप्रदेश)	माघ वति
५०६.	श्रीमती विमलादेवी/बलराम सरस्वा	V.P.O. आलमगढ़, पंजाब	माघ वति
५०७.	प्रकाश भाई/श्री दरजाजी राठौड़	कालिन्दी, (सिरोही), हाल-नडियाद	माघ वति
५०८.	सुखबीरसिंह/बलौरसिंह	देसू मलकाना, सिरसा, हरियाणा	माघ वति
५०९.	डूंगरराम बोधू (अध्यापक)/श्री वनारामजी	वार्ड ९, जसोल (वालोतरा)	माघ वति
५१०.	श्रीमती लक्ष्मीदेवी/गोवर्धनराम बसेर	चारण की नाऊ, तह.लक्ष्मणगढ़, सीकर	माघ वति
५११.	भँवरलाल/श्री पोकरराम	V.P.O. कवास (बाडमेर) ३४४००१	माघ सुदि
५१२.	सुरेशकुमार/श्री भोमारामजी तालनिया	वार्ड नं. २४, रामगढ़ शेखावाटी	माघ सुदि
५१३.	कँवरलाल सुथार/श्री अणदारामजी कुलरिया	V.P.O. सरली (बाडमेर) ३४४००१	माघ सुदि
५१४.	श्रीमती भागवती कौर/श्री बुद्धरामजी कालवा	V.P.O. देसू मलकाना, सिरसा (हरियाणा)	माघ सुदि
५१५.	भागीरथराम/श्री अखारामजी महीचा	मेनसर (बीकानेर)-३३४८०२	माघ सुदि
५१६.	मुखराम प्रजापत/श्री रतिरामजी दूढाड़ा	V.P.O. मोहन मगरिया (हनुमानगढ़)	माघ सुदि
५१७.	रामचन्द्र मेघवंशी/श्री चम्पालालजी कड़ेला	चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड, जोधपुर	माघ सुदि
५१८.	अनोपाराम सुथार/श्री तेजारामजी कुलरिया	V.P.O. दशाणिया (शेरगढ़) ३४२०२२	माघ सुदि
५१९.	तिलोकचन्द जाट/श्री सुरजारामजी झोरड़	V.P.O. मोहन मगरिया (हनुमानगढ़)	माघ सुदि
५२०.	श्रीमती गंगादेवी/श्री प्रभुजी दादावत,	V.P.O. पोमावा (सुमेरपुर)	माघ सुदि
५२१.	छगनलाल परमार/श्री धर्मरामजी परमार	मलाड (ई) मुम्बई	माघ सुदि
५२२.	भीकमचन्द/स्व. श्री लालूराम सुथार	विश्वकर्मा कॉलोनी, राजलदेसर (चूरू)	माघ सुदि
५२३.	रामेश्वरलाल माकड़/श्री सांवतारामजी	V.P.O. श्री बालाजी (नागौर)-३४१०२९	माघ सुदि

सर्वदर्शन चाद कोश

आध्यात्मिक षड् दर्शन के आरम्भवाद, विवर्तवाद, परिणामवाद, संवाद, जल्पावाद, कर्मवाद, मार्गवाद, समाजवाद, भौतिकवाद इत्यादि विश्व में विविध मत-मतान्तरों के विभिन्न सिद्धान्तों का कथन, सम्यक्त मण्डन एवं परमत खण्डन मन्तव्यों का संकलन करके विद्वत्मण्डल में अनेक विचारों का चिन्तन-मनन तथा आर्य ग्रन्थों के आध्यात्मिक, राजनैतिक, बौद्धिक, आर्थिक चर्चित चर्चाओं का संकलन करके भूमिक नियुक्ति स्वचित् शान्ति का कथन किया

मूल्य : 100 रु.

नासकेत गीता (टीका सहित)

कठोपनिषद् के यमराज-नचिकेता के संवाद का श्रीगुरु सम्प्रदायाचार्य श्री चरणदासजी महाराज द्वारा पद्यात्मक कृति इन नर्क के फलादेश दर्शन विषय में आध्यात्मिक विषयक चर्चा से भरपूर है। मूल पद्य का स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी मह सरल हिन्दी अनुवाद इसे और भी सुपाठ्य बना देता है।

मूल्य : 120 रु.

संस्कार चन्द्रिका

सनातन धर्म के सोलह संस्कारों का विस्तृत एवं प्रामाणिक विवेचन यहां किया गया है। साथ ही मानव-जीवन में स महत्ता, वैज्ञानिकता, आध्यात्मिकता के पक्ष पर भी प्रकाश डाला गया है।

मूल्य : 60 रु.

सुगम चिकित्सा (प्रथम भाग)

योगीराज स्वामी अचलरामजी महाराज द्वारा विरचित और प्रकाशित इसमें शारीरिक बाह्य/अन्तरांग रोगों पर 3225 सुगम के प्रयोग दिये गये हैं। विविध रोगों के प्रकार विवरण, रोग होने के कारण, पहचान, लक्षण, पथ्य-अपथ्य सहित रोग सुगम चिकित्साएँ लिख कर जनता का बड़ा उपकार किया है। सरल और सस्ते अचूक नुस्खे हैं, जो घर के आसपास उपलब्ध सामग्री से अचानक कभी भी प्रयोग करके योग्य स्वास्थ्य लाभ के साथ धनखर्च को भी बचाया जा सकता

मूल्य : 80 रु.

सुगम चिकित्सा (द्वितीय भाग)

इस द्वितीय भाग में योगीराज स्वामी अचलरामजी महाराज ने स्त्री-पुरुषों के अनेक गुप्त रोगों पर अनुसन्धान किये हैं। असाध्य 56 प्रकार के रोगों पर 57 विषय-प्रसङ्गों में 2150 प्रकार के सुगम चिकित्सा प्रयोग दिये गये हैं। इसमें पुरुषों मूत्र सम्बन्धी समस्त रोग, गुदा सम्बन्धी रोग, स्त्रियों के समस्त गुप्त रोग, बच्चों के रोग, चर्मरोग, नशा रोग, अग्निश प्रकाश के विषों का निवारण इत्यादि अनेक प्रसङ्गों के कारण, लक्षणों सहित उपयोगी और सरल नुस्खे देकर मानव स किता है। अन्त में आयुर्वेदिक शास्त्रों में आई जड़ी बूटियों को जानने के लिये अनेक प्रान्तीय भाषाओं में जड़ी-बूटि औषधि शब्द कोष (निघण्टु) भी दिया गया है।

मूल्य : 80 रु.

सुगम उपचार दर्शन (देवीदान औषधि कल्पतरु)

इसमें कई प्रकार की देशी जड़ी-बूटियों, आयुर्वेदिक दवाओं के अति सरल और सस्ते परीक्षित नुस्खे रोगों के उपचार—जो आज से डेढ़-सौ वर्ष पहले तपस्याशील अनुभवो स्वामी देवीदान जी महाराज द्वारा प्रसिद्ध गरीबी गुजर छपी थी, उसी का परिवर्धित/संशोधित संस्करण जनहित के लिये उपलब्ध करवाया गया है।

मूल्य : 90 रु.

तिलक प्रबोध दर्शन

तिलक करना क्यों जरूरी है ? कैसे करना ? कब करना ? तिलक का कारण क्या है ? इत्यादि तिलक सम्बन्धी अ उत्तर शास्त्रीय प्रमाणों सहित है, अन्त में महत्त्वपूर्ण दैनिक उपयोगी मन्त्र संलग्न है। मानव जाति दर्शन अर्थात् जा जन्म से है ? जाति क्या है ? बनाम जाति कैसे ? गद्य एवं पद्यात्मक एक सौ तीन कवित छन्द में विस्तृत विवरण क विषयों पर आध्यात्मिक भजनों/छन्दों का भण्डार है। पाँच वाणी का विशद निर्णय सहित विवेचन के सात भजन, गृहस्थ सुधार आदि अनेक प्रसङ्ग खोल कर दरसाये गये हैं।

मूल्य : 30 रु.

उत्तमरामप्रकाश भजन प्रदीपिका

इसमें स्वामी उत्तमरामजी महाराज के प्रचलित मुख्य चयनित भजन, जो अधिकाधिक संगीतप्रेमी गाते हैं, आ रामप्रकाशाचार्य जी महाराज कृत वेदान्त सिद्धान्त को अपूर्व आध्यात्मिक भजनों को अद्भुत उपदेश सामग्री है।

मूल्य : 30 रु.

सुखराम दर्पण अर्थात् उत्तम वाणी प्रकाश

इसमें पूर्व प्रकाशित वाणी प्रकाश (छः महात्माओं की अनुभव वाणी) में छपे स्वामी सुखरामजी महाराज कृत मूल की प्रशंसनीय एवं मननीय व्याख्या को अचलोत्तम ज्ञान पीयूष वर्षणी टीका द्वारा एक-एक शब्द के अनेकार्थ भावार्थ करके 'शताब्दी ग्रन्थ' को आकर्षक जिल्द में रचयिताश्री के निर्वाण शताब्दी स्मृति में समर्पित किया है।

मूल्य : 551 रु.

आध्यात्मिक सन्त वाणी शब्द कोष

यह सुखराम दर्पण का शेष भाग है, जो अलग आकर्षक जिल्द में दिया है, इसमें अनेकानेक सधुक्कड़ी भाषा में के रचयिता अन्यान्य विभन्न सम्प्रदायों के भारत प्रसिद्ध सन्तों की रचनाओं में आये कठिन शब्दार्थ, जो साहित्य

मूल्य : 451 रु.

मूल्य : 35 रु.

मूल्य : 35 रु.

मूल्य : 40 रु.

मूल्य : 100 रु.

मूल्य : 5 रु.

अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

फोन/फैक्स : 0291- 2547024, मोबा. 94144-18155, 94605-90474, E-mail : uttamashram@gmail.com

श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (सन्त समाज श्मशान भूमि कागा) राजगुरु श्री स्वामी हरिरामजी महाराज 'वैरागी' उद्यान

उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ) कागातीर्थ मार्ग पर जोधपुर में स्थित है। यह रास्ता आगे प्राचीन काग ऋषि की तपस्थली में पहुँचकर वहीं ऐतिहासिक शीतलामाता मन्दिर पर विराम करता है। आचार्य पीठ से आगे इसी मार्ग पर ७०० मीटर की दूरी पर श्री वैष्णव सन्त स्मृति स्थल (सन्त समाज श्मशान भूमि कागा) राजगुरु श्री स्वामी हरिरामजी महाराज 'वैरागी' उद्यान में पूर्वाचार्यों की समाधियों का धाम दर्शन है। जहाँ वि.सं. १९०० से अद्यावधि कुल ३० समाधियों में से कई भूमिगत गुप्त-लुप्त हैं, कई दर्शनीय-पूजनीय हैं, जो सिद्ध स्वरूप हैं। बहुधा आस्तिक उपासक मनोकामना लेकर आते हैं और श्रद्धा संयुक्त विश्वास से निराशा में आशा की ज्योति जगाकर इच्छित फल पाते हैं। इन समाधियों का व्यवस्थित चरण पादुका चिह्न स्थापित करते जीर्णोद्धार वर्तमान श्रीमहन्त स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज ने अथक प्रयासों से किया है। अभी कुल २६ समाधियों का उल्लेख उपलब्ध हो सकता है, जिनका विवरण निम्न अनुसार है -

क्रम	सन्त का नाम व समाधि	शिष्य-परशिष्य/गुरु नाम	जन्म वर्ग	साकेत तिथि
१	श्री शिवरामजी 'वैरागी'	श्री मगनीरामजी 'वैरागी' शिष्य	चारण	वि.सं. १९०० आषाढ सुदी ९
२	श्री मगनीरामजी 'वैरागी'	श्री नैनूरामजी के शिष्य	क्षत्रिय	वि.सं. १९०५ चैत्र सुदी ९
३	श्री नैनूरामजी 'वैरागी'	श्री स्वामी हरिरामजी 'वैरागी' के शिष्य	ब्राह्मण	वि.सं. १९२९ द्वि. भाद्रपद सुदी ४
४	श्री स्वामी हरिरामजी 'वैरागी'	श्री स्वामी गंगारामजी महाराज के शिष्य	भाटी क्षत्रिय	वि.सं. १९३३ चैत्र वदी २
५	श्री हीरालालजी 'वैरागी'	श्री स्वामी हरिरामजी महाराज के शिष्य	वैश्य	वि.सं. १९३४ वैशाख सुदी २
६	श्री छोटे हरिरामजी 'वैरागी'	श्री स्वामी नैनूरामजी महाराज के शिष्य	राठौड़ क्षत्रिय	वि.सं. १९३६ चैत्र सुदी ११
७	श्री जीयारामजी 'वैरागी'	श्री स्वामी हरिरामजी महाराज के शिष्य	सुथार	वि.सं. १९५४ मार्गशीर्ष सुदी १२
८	श्री गेनदासजी 'वैरागी'	श्री स्वामी सुखरामजी महाराज के शिष्य	ब्राह्मण	वि.सं. १९५६ आषाढ सदी ५
९	श्री सुखरामजी 'वैरागी'	श्री स्वामी जीयारामजी महाराज के शिष्य	जाट	वि.सं. १८५९ फाल्गुन वदी ४
१०	श्री हरलालरामजी 'वैरागी'	श्री स्वामी सुखरामजी महाराज के शिष्य	जाट	वि.सं. १९५९ फाल्गुन सुदी १४
११	श्री सेवादसजी 'वैरागी'	श्री स्वामी नैनूरामजी महाराज के शिष्य	जाट	वि.सं. १९६२ चैत्र सुदी १४
१२	श्री विश्वेश्वरदासजी (दूधाधारीजी)	श्री स्वामी नैनूरामजी महाराज के शिष्य	जाट	वि.सं. १९६३ फाल्गुन वदी १४
१३	श्री किसनारामजी 'वैरागी'	श्री स्वामी सुखरामजी महाराज के शिष्य	राजपूत	वि.सं. १९६४ भाद्रपद पूर्णिमा
१४	श्री किसनदासजी महाराज	श्री स्वामी नैनूरामजी महाराज के शिष्य	सुथार	वि.सं. १९६५ वैशाख सुदी ३
१५	श्री भानूरामजी 'वैरागी'	श्री स्वामी सुखरामजी महाराज के शिष्य	महेश्वरी वैश्य	वि.सं. १९६७ श्रावण सुदी ७
१६	श्री जमनादासजी	श्री स्वामी नैनूरामजी महाराज के शिष्य	कुमावत	वि.सं. १९८० पौष सुदी १४
१७	श्री संत रणछोड़दासजी	श्री स्वामी दूधाधारीजी महाराज के शिष्य	कुमावत	वि.सं. १९५५ आषाढ वदी १३
१८	श्री सेवारामजी	श्री स्वामी सुखरामजी महाराज के शिष्य	माली	वि.सं. १९९६ आषाढ सुदी १०
१९	श्री अचलरामजी 'वैरागी'	श्री स्वामी सुखरामजी महाराज के शिष्य	सैनी कछवाह	वि.सं. १९९९ द्वि. ज्येष्ठ वदी ७
२०	श्री साध्वी चतुरीबाई जी	श्री स्वामी सुखरामजी महाराज के शिष्य	माली	वि.सं. संवत् अज्ञात
२१	श्री अचलनारायणजी	श्री स्वामी अचलरामजी 'वैरागी' के शिष्य	कछवाह	वि.सं. २०२४ माघ सुदी १४
२२	श्री उत्तमरामजी 'वैरागी'	श्री स्वामी अचलरामजी 'वैरागी' के शिष्य	सूत्रकार क्षत्रिय	वि.सं. २०३४ आषाढ सुदी ९

अन्य श्री हरिरामजी महाराज के शिष्यों में (१) सन्त हीरादासजी महाराज, (२) साध्वी मीराबाईजी, (३) सन्त आत्मारामजी की तीन समाधियाँ भी यहीं पर हैं, जिनकी निर्वाण तिथि तथा संवत् अज्ञात है। श्री सुखरामजी महाराज के शिष्यों में - (१) सन्त भगवानदासजी की एक समाधि भी यहीं पर है, निर्वाण तिथि अज्ञात है। शेष दो समाधियों के नाम-परिचय अज्ञात है, १९५५ में भी उन पर शिलालेख/चरण पादुका नहीं थी। श्री गंगारामजी महाराज की समाधि कोटा में है।

श्रीवैष्णव अग्र रसिक परम्परा में जोधपुर विरक्त गूदड़ गद्दी के वर्तमान पीठाधीश्वर

वैशक्तिरघु, सर्वोत्तम सकलेश्वर
समिदानन्द श्रीराम भूति प्रदायक ॥

नमस्तु भगवते वासुदेवाय नमस्तु ॥ ५४ ॥
नमस्तु ध्येय लयाय, नमस्तु त्वय नमः ॥



परम पूज्य स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्य जी महाराज 'अच्युत'
श्री महन्त उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ), कागातीर्थ मार्ग, जोधपुर-342006 मोबाइल: 94144 18